जिस से ख़ारी कुवें शीरए जाँ बने
उस जुलाले हलावत पे लाखों सलाम

लुआबे दहने मुस्तफ़ा

मौलाना सिराजुल क़ादरी बहराइची

ग़ाज़ी किताब घर
गंगवल बाज़ार बहराइच (युपी)

786 / 92

जिस से खारी कुएं शीर ए जाँ बने
उस जुलाले हलावत पे लाखों सलाम

लुआबे दहने मुस्तफ़ा

सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम

मौलाना सिराजुल क़ादरी बहराइची

खतीब व इमाम हबीब इस्माईल मुसाफ़िर ख़ाना

मस्जिद 33 पाकमुडिया स्ट्रीट मुंबई 40003

9870742302/9699779363

नाशिर

ग़ाज़ी किताब घर

साबरी यतीम ख़ानह जामिआ सरकार आला हज़रत गँगवल बाज़ार, बहराइच शरीफ़ (यूपी) इंडिया

नाम किताब: लुआबे हदने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
लेखक: मौलाना सिराजुल क़ादरी बहराइची
सने इशाअत: 2010
तादाद: 1100
हदयह:

मिलने के पतेः

न्यू सिल्वर बुक एजंसी मोहम्मद अली रोड मुंबई–3
नाज़ बुक डिपो मोहम्मद अली रोड मुंबई–3
इक़रा बुक डिपो मोहम्मद अली रोड मुंबई–3
बुक सिटी मोहम्मद अली रोड मुंबई–3
मक्तबा क़ादरियह मस्जिद क़र्तबा जोगेश्वरी
मन्सूर बुक सेलर दरगाह शरीफ़ बहराइच

रज़्वी किताब घर दिल्ली
ताज बुक हाउस हैदराबाद
लतीफ़िया बुक डिपो नागपूर
रहीमिया बुक डिपो पूना
नाज़ बुक डिपो कलकत्ता
शरीफ़ी किताब घर चिंबुर
कुतुब ख़ानह अमजदिया देहली

ताज बुक डिपो नागपूर
हनीफ़ बुक डिपो नागपूर
जावेद बुक डिपो कलकत्ता
नैयर बुक सेलर इलाहाबाद
गाज़ी बुक डिपो दरगाह रोड बहराइच
फ़लाही बुक डिपो वाराणासी
जमील बुक डिपो बहराइच

शरफ़े इंतिसाब

जब धरती बेनूर थी इन्सानियत सिसक रही थी, आदमियत दम तोड़ रही थी, ख़ुद तराशीदह बुतों की इबादत की जा रही थी, जुल्म व ग़ारत गरी इंसान की बेबसी पर हंस रही थी, ना दर्द की दवा थी, ना कोई दरमाँ था अंबिया ए किराम की आमद का सिलसिला मुंक़ता हो चुका था।

वीरान धरती और बन्जर ज़मीन पर किसी ऐसे हादी का इन्तिज़ार था जिस की आमद से शबेतीरह का दामन चाक हो, जौरो जफ़ा व जुल्म का ख़ातिमह हो, अहले दुनिया की तक़दीर का सितारा दरख़्शाँ हो चुनाँचे मज़लूम इंसानों की आह व ज़ारी और दुआ से रहमते ख़ुदा वंदी जोश में आइ सरज़मीने मक्का से वह आफ़ताब तुलू हुवा जिस की शुआओं से मशरिक़ों मग़रिब का गोशह गोशह बुक़्क़ ए नूर बन गया, सरज़मीने अरब ही नहीं गुलिस्ताने आलम में बहार आई।

जिस सुहानी घड़ी चमका तैबा का चाँद
उस दिल अफ़रोज साअत पे लाखों सलाम

उसी नाइबे परवरदिगारे आलम, हम गुलामों के ग़म गुसार, रहमतुललिलआलमीन, राहतुलआशिक़ीन महबूबुल आरिफ़ीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाहे नाज़ में अबरे जूदो सख़ा के चंद छीटों की उम्मीद लिए हाज़िर हूँ।

गर क़बूल उफ़तद ज़हे इज़्ज़ो शर्फ़

सगे बारगाहे रज़ा

सिराजुल क़ादरी बहराइची

नक़शे ज़र्री

खुदा वंदे कुद्दूस जब किसी हादी का इन्तिख़ाब फ़रमाता है तो उसको हर नौइयत से मुम्ताज़ फ़रमाता है उसकी ज़ात को तमाम ख़ूबियों से आरास्ता फ़रमाता है उस का किरदार, क़ौलो फ़ेअल उस की सदाक़त, अमानत दारी रास्तबाज़ी ही उस के हादी व क़ाइद होने की सबसे बड़ी दलील व निशानी होती है अच्छी तबीअत और पाकीज़ह ख़सलत के लोग उसकी तक़दीस, तहारत, रविश, हक़ गोई, औसाफ़े हमीदह को देखते ही उसकी दावते हक़ को कुबुल कर लेते हैं।

लेकिन बाज़ लोग हक़ीक़त आशिकारा होने के बावजूद अपनी चौधराहट बाक़ी रखने के लिए इस क़दर मुतअस्सिब होते हैं कि दावते हक़ के सामने सरख़मीदह होने के बजाए इक रोशन हक़ीक़त का इन्कार कर बैठते हैं।

रहमते दोआलम हादिये बरहक़ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादते बासआदत से क़ब्ल यहूदियों के उलमा उनकी आमद की बशारत देते थे आसमानी कुतूब के हवाले से आपकी तशरीफ़ आवरी के मुन्तज़िर थे लेकिन आफ़ताबे रिसालत की जब जलवह गरी हुई तो मुशरिकीने मक्का के साथ साथ यहूदो नसारा भी ज़ाती नसबी, लिसानी, ख़ानदानी, इलाक़ाई अग़राज़ों मक़ासिद की बुन्नियाद पर दाना ए गुयूब मौला ए कुल नूरे मुजस्सम रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दावते हक़ ठुकरा कर अपनी ख़ुबासत का इज़हार, नफ़रत, अदावत, मुक़ातेआ के ज़रिअह करते हैं और हक़ को छुपाते हैं जो अलामात, निशानियाँ, सिफ़ाते आलियह आसमानी कुतुब में बयान हुई थीं जिसकी बुन्नियाद पर बहुत से यहुदो नसारा दाख़िले इस्लाम हुए उसे अहले इल्म ज़ाहिर नहीं करते नबि ए आख़िरुज़्ज़माँ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

का वास्तह जिन लोगों से पड़ा था, इस्लाम दुश्मनी में वह अपने अपने पेशरोओं से कम न थे अल्लाह तआला अपने नबी व रसूलों को ऐसी कुव्वत व ताक़त अता फ़रमाता है कि क़ौम के हर मुतालेबे को पूरा कर देते हैं उमूरे ग़ैबियह पर मुत्तला, बीमारों को शिफ़ा, बे मोसम बारिश, मुर्दों को ज़िन्दह करना पत्थरों से चश्मे जारी करना, चट्टान से हामिलह ऊंटनी का निकलना, असा का साँप बन जाना ग़रज़ेकि ऐसे ऐसे मुहय्यरूल उकूल वाक़ेआत का जुहूर जिसकी अज़मतो सतवत के सामने गरदनें झुक जाया करती थीं ऐसी चीज़ों के ही जुहूर को मोजिज़ह कहते हैं। जो अंबिया व मुरसलीन के लिए मख़्सूस रहा।

अहदे रिसालत में जब भी किसी सख़्त दुश्वारियों से वास्तह पड़ता तो उस वक़्त अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाहे रहमत में हाज़िर हो कर अपनी परेशानियों को दूर करने के लिए फ़रयाद करते हैं ज़ेरे नज़र रिसाला में हमने सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लुआबे दहन के मोजिज़ह को यकजा करने की अदना कोशिश की है मोतबर किताबों के हवाले से इन वाक़ेआत को पढ़िये और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ाते बाबरकात का अंदाज़ह लगाइये कि रब्बे क़दीर ने आपके थूक शरीफ़ को किस क़दर ख़ैरो बरकत सिहतो शिफ़ा का मंबा बनाया था कुंवें में डालदें तो खारा पानी मीठा हो जाए, खाने में आ जाए तो मुख़्तसर खाने से हज़ारों आदमी शिकम सैर हो जाएं, ज़ख़्मों पर लगा दिया जाए तो ज़ख़्म मुंदमिल हो जाए क्या किसी के पास लुआबे दहन का जवाब हैं?

हरगिज़ नहीं हमारा तुम्हारा थूक अगर किसी चीज़ में मिल जाए तो उसे जानवर भी खाने को तैयार ना होंगे मगर हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के थूक शरीफ़ को हाथों

में लेकर चेहरों पर लगाया जाए या जिस्म के किसी हिस्से पर लगया दिया जाए तो इत्र से बढ़कर उस जगह से ख़ुशबू निकलना शुरू हो जाए।

जब सरकार के लुआबे दहन का यह आलम था तो सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पूरे सरापा का आलम क्या रहा होगा?

फ़ाज़िले बरेलवी रज़ि यल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं

वह कमाले हुस्ने हुज़ूर है कि गुमाने नक़्से जहाँ नहीं
यही फूल ख़ार से दूर है यही शमा है कि धुवाँ नहीं

परवरदिगारे आलम अपने महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सदक़े व तुफ़ैल में हम सब को आख़िरत की अबदी निमतों से मालामाल फ़रमाए। आमीन

गदाए कूचए मसऊदे ग़ाज़ी
सिराजुल क़ादरी बहराइची

नात शरीफ़

(आला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी)

वाह क्या जूदो करम है शहे बतहा तेरा
नहीं सुनता ही नहीं माँगने वाला तेरा

धारे चलते हैं अता केवह है क़तरा तेरा
तारे खिलते हैं सख़ा के वह है ज़र्रह तेरा

फ़र्श वाले तेरी शौकत का उलू क्या जानें
खुस्रूवा अर्श पे उड़ता है फरेरा तेरा

आसमाँ ख़्वान ज़मीं ख़्वान ज़माना मेहमान
साहिबे खा़ना लक़ब किसका है तेरा तेरा

मैं तो मालिक ही कहूँगा कि हो मालिक के हबीब
यानी, महबूबो मोहिब में नहीं मेरा तेरा

तेरे क़दमों में जो हैं ग़ैरका मुँह क्या देखें
कौन नज़रों पे चढ़े देख के तलवा तेरा

तेरे टुकडों पे पले ग़ैर की ठोकर पे ना डाल
झिड़कियाँ .खायें कहाँ छोड़के सदक़ा तेरा

तेरे सदक़े मुझे एक बूँद बहुत हैतेरी
जिस दिन अच्छों को मिल जाम छलकता तेरा

तेरी सरकार में लाता है रज़ा उस को शफ़ी
जे मेरा गौ़स है और लाडला बेटा तेरा

नात शरीफ़

(अज़:मुहम्मद शरफ़ आलम ख़ाँ अशरफुल क़ादरी सीतामढ़ी(बिहार)

खुल्द से आला भी लज़्ज़त तो चखादी जाए
कुरबे रौज़ह हमैं थोड़ी सी जगह दी जाए

सारे दुख दर्द की पल में ही दवा हो जाए
खाक रौज़ह की अगर मुझ को खिलादी जाए

उम्र भर वह नहीं चाहेगा कभी मुश्के ख़ुतन
मरक़दे आक़ा की बू जिस को सुंघादीजाए

दिल से जाए ना कभी इश्क़े नबी रब्बे करीम
गो मेरी जान भी मिट्टी में मिलादी जाए

छीन ली जाए सभी लज़्ज़ते दुनिया हम से
लज़्ज़ते इश्क़े नबी हम को अता की जाए

मैं यह समझुँगा मुझे निमते कौनैन मिली
यादे आक़ा जो मेरे दिल में बसा दी जाए

बक तलक रोते रहें हिज्रे नबी में यारब
कुछ मय दीदे नबी हमको पिलादी जाए

है तमन्ना यही हो जबकि मेरी जान फ़ना
सामने आक़ा हों और रूह निकाली जाए

जाने अशरफ़ न चली जाए कहीं फुरक़त में
अपने बीमार को फ़ौरन ही शिफ़ा दी जाए

☆☆☆

नाते रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

शैख़े तरीक़त अल्लामह शमसुज़्ज़ुहा गोरखपुरी अलैहिर रमहा

नूरे अज़ल की ताबिशें किस जा नहीं कहां नहीं
हर शय है उन के नूर से जलवह कहां अयां नहीं

रहमते कुल की वुस्अतें घेरे में हैं लिए हुए
रहमते हर जहान हैं उन का करम कहां नहीं

जुद व नवाज़िश व करम फ़ैज़े नबी तो देखिए
कुतब व वली व ग़ौस से ख़ाली कोई ज़मां नहीं

ऐसा कोई हुआ नहीं होगा न अब जहान में
जिस के चमन में दोस्तो का टे नहीं ख़िज़ां नहीं

शह के कमाल व हुसन की तअरीफ़ क्या बयान हो
बे चश्म है मेरी ज़बाँ चश्म को भी ज़बाँ नहीं

यह शमस व मैह का नूर भी आईना दार वस्फ़ है
फ़ैज़े तजल्लियात मे कुछ कुव्वते बयां नहीं

नाते रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

ज़िया यज़दानी बहराइच शरीफ़

शगुफ़्तह काश मेरे दिल की भी कली हो जाए
दरे रसूल पे मेरी भी हाज़री हो जाए

जहन्नम उस के लिए क्यों न दाइमी हो जाए
जिसे रसूल के यारों से दुश्मनी हो जाए

जिसे भी दअवा है अल्लाह की मुहब्बत का
तो उस को चाहिए वह ताबेअे नबी हो जाए
यह शान सिर्फ़ ख़ुदा वन्दे ज़ुल जलाल की है
कि काईनात में जो चोह बस वही हो जाए
इलाही कलमए तैय्यब हो लब पे और दरूद
मेरी हयात का जब वक़्त आख़िरी हो जाए
अमल हो अपना अगर उस्वए नबी पर ज़िया
तो फिर यह ज़िंदगी सच मुच की ज़िंदगी हो जाए

देखिये पत्थर का दिल कितना हसींतर हो गया

(अल्लामह मुहम्मद सलीम अख़्तर बिलाली दरभंगा बिहार)

आमिना का लाडला नबियों का सरवर हो गया
आज अक़्सा की इमामत से यह बावर हो गया
हरतरफ़ है धूम बाबे इल्म हैं हज़रत अली
एक क़तरा है नबी का जो समंदर हो गया
जिस भी खाने में दिया है आप ने अपना लुआब
बिलयकीं दुनिया के खानों से वह बेहतर होगया
नौअे इन्साँ को दिया है आपने दरसे वफ़ा
कुफ़्र का ख़ूगर जो था ईमाँ का पैकर हो गया
एक नज़र बहरे ख़ुदा जाने हज़ीं पे मुस्तफ़ा
की जिए रोशन सियह इसयाँ का दफ़्तर हो गया
आपने आके ज़माने का बदल डाला मिज़ाज
जंग का आदी यह इन्साँ अम्न परवर हो गया
उन की यादों ने चमक बख़्शी है दिल को इस तरह
रफ़तह रफ़तह दिल मेरा माहे मुनव्वर हो गया
कर लिया महफ़ूज़ उस ने नक़्शे पाए मुस्तफ़ा
देखिये पत्थर का दिल कितना हसीं तर हो गया

हुब्बे अहमद पर रज़ाए रब का है दारोमदार
हो गया जो उनका वह महबूबे दावर हो गया
मिलगई तुझ को बिलाली मिल गई राहे निजात
नक़्शे पाये मुस्तफ़ा जो तेरा रहबर होगया

जैसा जिसे हुज़ूरने चाहा बना दिया

(अज़ः वसी सीतापूरी)

अदना को एक निगाह में आला बना दिया
ज़र्रे को आसमान का तारा बना दिया
बू जहेल कम निगाह ने समझा न आज तक
कैसे नबी ने चाँद को टुकड़े बना दिया
यह उनके इख़्तियार की अदना मिसाल है
जैसा जिसे हुज़ूर ने चाहा बना दिया
आक़ा की बात छोड़िये उन के गुलाम ने
एक चश्मे इल्तिफ़ात में क्या क्या बना दिया
जिसकी मिसाल ढूँडने से भी न मिलसके
रब ने मेरे हुज़ूर को ऐसा बना दिया
कम ज़र्फ़ नजदियों की यह जुरअत तो देखिये
मुख़्तारे दो जहाँ को भी ख़ुदसा बना दिया
अक़्लो हुनर की वुसअतें हैराँ हैं किस तरह
पत्थर में जान डालदी गोया बना दिया
उन की निगाहे फ़ैज़ का क्या पूछना वसी
क़तरे पे पड़गई है तो दरया बना दिया

☆☆☆

नाते मुक़द्दस

(अज़ःक़मर मुसतफ़वी शम्साबादी)

जिस को दामाने मुहम्मद मुस्तफ़ा मिलता नहीं
उम्र भर उसदे करे उसको ख़ुदा मिलता नहीं

जिसके दिल में उन की यादोंका न हो रोशन चराग़
उसका तो कौनैन में जलता दिया मिलता नहीं

नामे अहमद और अहद में मीम का है इम्तियाज़
मीम को करदो जुदा तो फिर जुदा मिलता नहीं

अंबिया यूँ तो हज़ारों हैं ख़ुदा की बज़्म में
जुज़ मुहम्मद के हबीबे किबरिया मिलता नहीं

रखलिया सीने में पत्थर ने नबी का नक़्शे पा
दिल में नजदी के मगर नूरे ख़ुदा मिलता नहीं

दिन में वह शमसुद्दुहा और रात में बदरूद्दुजा
नज़में आलम में तो ऐसा मैह लक़ा मिलता नहीं

जिन की गरदे पा को भी न पा सके रूहुल अमीं
तेज़ रफ़तारी में उन सा दूसरा मिलता नहीं

तालिबो मतलूब की कुरबत पे सदक़े जाइये
दो कमानों का भी उस में फ़ासिला मिलता नहीं

ज़िंदगी की तंग गलियोंमें उजाला करदिया
मोंहसिने इंसानियत सा हमनवा मिलता नहीं

ख़त्म है उनपर रूख़े इंसानियतकी आबो ताब
साफ़ और शफ़्फ़ाफ़ इतना आइना मिलता नहीं

ख़ल्क होया क़ब्र हो बरज़ख हो या महशर क़मर
उन के दुश्मन को कहीं भी आसरा मिलता नहीं

नाते पाक

(अज़ःराज़ इलाहाबादी)

चाँद में देखो जमाले मुस्तफ़ा
देखो सूरज में जलाले मुस्तफ़ा

सब चमकते हैं उन्हीं के नूर से
है ज़िया ए हक़ जमाले मुस्तफ़ा

अंजुमन दर अंजुमन दर अंजुमन
मैहका मैहका है ख़याले मुस्तफ़ा

सर से पा तक मोजिज़ह ही मोजिज़ह
मिल नहीं सकती मिसाले मुस्तफ़ा

चाँद सूरज यह सितारे यह फ़लक
सब के सब हैं पाए माले मुस्तफ़ा

तुम को मिलजाएं तुम्हारी मस्जिदें
पहले बन जाओ बिलाले मुस्तफ़ा

चाँद दो टुकड़ा हुवा सूरज फिरा
देख ऐ दुनिया कमाले मुस्तफ़ा

आज भी रोशन हैं तारों की तरह
आशिक़ो असहाबो आले मुस्तफ़ा

जब कि लाज़िम है नमाज़ों में दुरूद
फिर ना क्यों आये ख़याले मुस्तफ़ा

क़ब्र में पैहचानना हो गा उन्हें
लेके मरजाना ख़याले मुस्तफ़ा

राज़ जब जिबरईलभी समझे नहीं
कौन समझे हालो काले मुस्तफा

नात शरीफ़

(अज़: सिद्दीक़ जमाल पुर इलाहाबाद)

याद फिर आया जमाले मुस्तफ़ा
सज गई बज़्मे ख़याले मुस्तफ़ा

उन के जैसा किया कोई आया यहाँ
पेश कर दुनिया मिसाले मुस्तफा

हो गया अफ़ज़ल फ़रिश्तों से बशर
अल्लाह अल्लाह यह कमाले मुस्तफ़ा

बिक नहीं सकते वह दुनिया में कभी
जो हक़ीक़त में हैं आले मुस्तफ़ा

चाँद व सूरज को पसीने आगए
देख कर जाहो जलाले मुस्तफ़ा

मुनतज़िर रहते फ़रिश्ते अर्श पर
कब अज़ाँ देंगे बिलाले मुस्तफ़ा

चाँद एक टुकड़ा है उन के नूर का
चाँद से क्या दूँ मिसाले मुस्तफ़ा

एहले दीं ही जानते हैं ऐ जमाल
कितना रोशन है ख़याले मुस्तफ़ा

नात शरीफ़

मुहम्मद क़मरुज़्ज़मां क़मर मुज़फ़्फ़रपूरी

दिखादो आक़ा जमाले ज़ेबा हर एक उम्मती इज़्तिराब में हैं
ज़माना तरीक हो रहा है कि महेर कब से नक़ाब में है
रसूले आज़म हबीबे दावर निगाहे लुत्फ़ो करम हो हम पर
बचालो आक़ा शहे पयमबर कि आसी उम्मत अज़ाब में है
बनाया हक़ ने नबी को ऐसा कि उन का हमसर हुआ न होगा
है बादे रब के उन्हीं का रुत्बह न कोई उन के जवाब में है
सराबा नूरे ख़ुदा हैं आक़ा जभी तो उन का नहीं है सायह
क़मर ने जु भी उन्हीं से पाई उन्हीं का नूर आफ़ताब में है
पढ़ो हदीसे क़तादह दिल से मिली बसारत नबी के सदक़े
शिफ़ा नहीं है दवा में ऐसी जो मुस्तफ़ा के लुआब में है

क़मर है दामन पसारे आक़ा
अता हो अपने करम का सदक़ह
तुम्हीं हो क़ासिम यक़ीं है मुहकम
लिखा यह तेरी किताब है

☆☆☆

यारसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

(अज़: क़मर मुस्तफ़वी शम्साबादी)

निकल जाए मेरे दिल का भी अरमाँ या रसूलल्लाह
दिखादो ख़्वाब ही में रूए ताबाँ या रसूलल्लाह

तुम्ही हो जाने ईमाँ ऐहले क़ुरआँ या रसूलल्लाह
गुलिस्ताने हरम की हो बहाराँ या रसूलल्लाह

हमारी कशति ए ईमाँ तुम्हारे ही हवाले है
मदद का वक़्त है उट्ठा है तूफाँ या रसूलल्लाह

बदलदो उन की फ़ितरत ख़ूबि ए ईमाने कामिल से
फ़क़त हैं नाम ही के जो मुसलमाँ या रसूलल्लाह

ज़माना छूटता है छूट जाए ग़म नहीं लेकिन
तुम्हारा हाथ से दामन ना छूटे या रसूलल्लाह

मसीहा बन के आए गो यहाँ कितने नबी लेकिन
तुम्हीं हो दर्दे इन्सानी के दरमाँ या रसूलल्लाह

शबीहे हुस्ने यकता देख कर दिल बोल उठता है
तुम्हारा रूख़ है गोया अकसे कुरआँ या रसूलल्लाह

तुम्हारी रोशनी का शम्स छुपते ही नहीं देखा
कि तुम हो लाज़वाल एक महरे ताबाँ या रसूलल्लाह

मुनव्वर हो गए हैं दो जहाँ जिस की शोआओं से
यही है बस क़मर का एक नारा या रसूलल्लाह

सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम

☆☆☆

नात शरीफ़

किस्मत सिकंदर पूरी

अंबेडकर नगर (यूपी)

पड़ा हुआ दरे ख़ौरूल उमम पे रहने दो
मुझे हुज़ूर के रहमो करम पे रहने दो

ख़्याल शहरे मदीनह का कर रहा है तवाफ़
अब और तब्सिरह ख़ुल्दो इरम पे रहने दो

कि सैर हो के न सुन्नत से इंहिराफ़ करे
कभी तो भूक का पत्थर शिकम पे रहने दो

अबूल बशर को मिली जिस से अज़मते रफ़तह
वह इस्मे पाक लबे मुहतरम पे रहने दो

गुनाहगार का सर है गुनाहगार का सर
इसे हुज़ूर की रेहले क़दम पे रहने दो

नबी की याद में टपके जो आंख से आंसू
फ़लक पे अर्श पे लौहो क़लम पे रहने दो

हज़ार करबो बला से गुज़र के आया है
लिखा हुवा यह वफ़ा के अलम पे रहने दो

वजूद यादे मुसलसल अदम फ़रामोशी
बहस अब और वजूदो अदम पे रहने दो

जब उन की नात पढ़ुंगा नफ़स नफ़स क़िस्मत
तो फिर कहुंगा मुझे अपने दम पे रहने दो

अरसए हश्र तक अंदेशए मौहूम न हो

रहमते बारिए हक़ से कभी महरूम न हो
आप का ज़िक्र जो करता रहे मग़मूम न हो

बन्द होजाए अभी दिल का धड़कना हमदम
सफ़हए दिल पे अगर नाम "वह" मरकूम न हो

क़द्र व क़ीमत ही कोई उस के ज़माने में नहीं
आप के नाम से गर ज़िंदगी मौसूम न हो

जांकनी में जो रहे विर्दे ज़बां कलमए हक़
अरसए हश्र तक अंदेशाए मौहूम न हो

आप दानाए सुबुल ख़ातमे रुसुल हैं आक़ा!
कौन सी बात है जो आप को मअलूम न हो

हश्र तक बानिए इस्लाम का पैग़ाम है यह
कोई मख़्लूक़े ख़ुदा मुफ़्लिस व मज़लूम न हो

है अदब शर्त यहां इश्क़ ज़रा और संभल
यह मदीनह है यहाँ हरकते मज़मूम न हो

उन से ही उन को तलब करने की हस्रत ऐ दिल!
हाए ग़ाफ़िल, यह तेरी ख़्वाहिशे मअसूम न हो

उस को मिल जाए शहेन्शाही दो आलम की सुहेल
जो गुलाम आप का हो, वह कभी महकूम न हो

सुहेल फ़सीही

सुपर प्रिंट, भोली रोड, वासेअ पूर, धंबाद(झारखंड)

☆☆☆

वही क़लम मेरे दस्ते हुनर में रख्खा जाए

ख़ुशा यह नूर बसीरत बशर में रख्खा जाए
नबी के इश्क़ का सौदा है सर में रख्खा जाए

मेरे नबी हैं हिदायत के मंबा व मख़्ज़न
ब हर क़दम उन्हें फ़िको नज़र में रख्खा जाए

भटकने से रहे महफ़ूज़ नस्ल आइंदह
वही चिरागे हुदा रह गुज़र में रख्खा जाए

मिला है उन से ख़ज़ाना जो इश्क़ो ईमाँ का
ब इहतियात दिले मोतबर में रख्खा जाए
ख़ुलूस व महर व वफ़ा, इश्क़े सरवरे आलम
यह रख़ते जाँ हैं इन्हें हर सफ़र में रख्खा जाए
अक़ीदतो के हवाले से या रसूलल्लाह!
बयां हो मदह तो बाबे असर में रख्खा जाए
जो बरकतों का वसीलह है रहमतों का सबब
वह इस्मे पाके मुहम्मद है घर में रख्खा जाए
रक़म तराज़ हो नाते नबी में जो पैहम
वही क़लम मेरे दस्ते हुनर में रख्खा जाए
सुहेल रौज़ए अक़दस पे लब कुशाई न हो
जो इलतिजा हो उसे चश्मे तर में रख्खा जाए

सुहेल फ़सीही

सुपर प्रिंट, भोली रोड, वासेअ पूर, धंबाद(झारखंड)

मोजिज़ ए लुआबे दहन(1)

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम बमौक़ ए हिजरत हज़रते अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि यल्लाहु अन्हु के हमराह गारे सौर में जो जबले सौर में वाक़े है तशरीफ़ ले गए

यारे ग़ारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अर्ज़ करते हैं कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप बाहर ही तशरीफ़ रख्खें ताकिमैं जाकर ग़ार को अच्छी तरह साफ़ करलूँ।

चुनानचे हज़रते अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि यल्लाहु तआला अन्हु ग़ार के अंदर दाख़िल हुए और साफ़ किया जब उस के बालाई हिस्से मेंआए तो याद आया कि एक कोना सफ़ाई से बाक़ी रह गया है वापस जाकर उसे भी साफ़ करते हैं तमाम सूराख़ों कोअपनी उंगली से टटोल टटोल कर बंद करते हैं मगर एक बड़ा सूराख़ बाक़ी रह जाता है जिस पे अपने पाओं की ऐड़ी रख देते हैं अचानक आपको साँप ने डस लिया सरकारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अबू बकर के ज़ानोंपर सर रख कर आराम फ़रमा रहे हैं साँप के काटने कि वजह से पाओं सूज गया और आँखें अश्क बार हो ज़ाती हैं यहाँ तक कि आँसुओं के क़तरे पलकों से ढलक कर रूख़े अनवर पर मोतियों की तरह बिखर जाते हैं।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं ऐ अबू बकर यह क्या हुवा अर्ज़ करते हैं साँप ने काट लिया है सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं तुम ने मुझे पहले क्यों नहीं बताया अर्ज़ करते हैं कि या रसूलल्लाह सल्लाल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मैं नहीं चाहता था कि आप की नींद को परेशान करूँ हुज़ूर इरशाद फ़रमाते हैं पाओं बाहर निकालो अबू बकर पाओं बाहर निकालते हैं सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अपना लुआबे दहन शरीफ़ लगा कर दस्ते रहमत फेरते हैं फिर क्या था अचानक वरम ग़ाइब हो गया। और दर्द से मुकम्मल इफ़ाक़ा हो गया।

मोजिज़ ए लुआबे दहन (२)

जंगे ख़ैबर के मौक़ापर बड़े बड़े सूरमा जाँ निसार सहाब ए किराम इस्लामी झंडा लहराते हुए क़िल ए क़ुमूस पर यलग़ार करते हैं लेकिन फ़तेह ना करसके तो सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं **लऊतियन्ना हाजिहिर्रायता ग़दन रजुलन यफ़तहुल्लाहु अला यदैहि युहिब्बुल्लाहा व रसूलहू** (बुख़ारी शरीफ़)

तर्जुमहः मैं कल ऐसे शख़्स को झंडा अता करूंगा किजिस के हाथों अल्लाह तआला फ़तेह अता फ़रमायेगा और वह अल्लाह और उस के रसूल से मुहब्बत रखता है। इरशादे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सुन्ने के बाद हर एक सहाबी में फ़ातहे ख़ैबर बनने की तमन्ना जाग उठती है और हर सहाबी की यही ख़्वाहिश है कि काश कल सुबह इस्लामी अलम मुझे मिल जाए और इस क़िला के फ़तेह का फ़ख़्र व शर्फ़ मुझे हासिल हो जाए वजह सिर्फ़ यह थी कि सहाबा का ईमान व अक़ीदह यह था कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के फ़रमान के मुताबिक़ कल यह क़िला ज़रूर फ़तेह हो जाएगा और मुख़बिरे सादकि सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जिसे इस्लामी झंडा अता फ़रमायेंगे वही फ़ातहे ख़ैबर होगा।

जिस का नाम इस्लामी तारीख़ में सुनहरे हुरूफ़ में लिखा जाएगा शबे इंतिज़ार गुज़री सुबह की आमद हुई तो ग़ैब दाँ रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः **ऐना अली इब्ने अबी तालिब** अली इब्ने अबी तालिब कहाँ हैं।

सुबहानल्लाह यह दौलते बे बहा और निमते उज़मा हज़रते अली शेरे ख़ुदा के हिस्से में आई सहाब ए किराम अर्ज़ करते

हैं या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अली की आँखों में तकलीफ़ है उन की आँखें दुख रही हैं वह आशूबे चश्म में मुब्तिला हैं जख़्म खुर्दा इन्सानियत के तबीब रहमते दो जहाँ सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं उन्हें बुलाओ।

चुनानचे मौला ए कायेनात रज़ि यल्लाहु अन्हु हाज़िरे बारगाह होते हैं सय्यदुल अंबिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अपना लुआबे दहन शरीफ़ हज़रते अली की आँखों में डालते हैं जिस की बरकत से आँखें फ़ौरन ठीक हो जाती हैं।

हज़रते अली कर्रमल्लाहु वहजु फ़रमाते हैं लुआबे दहन शरीफ़ की बरकत से मेरी आँखों में पहले से ज़्यादह रोशनी आ जाती है और अख़ीर उम्र तक कभी भी मैं आशोबे चश्म में मुबतिला न हुवा ।

मोजिज़ ए लुआबे दहन (3)

जंगे उहद में बशीर बिन अक़रबह अलजुहनी रज़ि यल्लाहु अन्हु के वादिले मोहतरम शहीद हो गए तो वह रोते हुए वालि ए दो जहाँ सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाहे अक़दस में पहुँचे सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ बशीर बिन अकरबह क्यों रोते हो?क्या तुम्हारे लिए बेहतर नहीं कि तेरा बाप वालिए दो जहाँ हो? और तेरी माँ आयेशा सिद्दीक़ह हों? उस के बाद सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उनके सर पर दस्ते रहमत फेरा।

हज़रते बशीर बिन अक़रबह का बयान है कि आक़ाए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के दस्ते मुबारक का यह असर कि जिन बालों को दस्ते रसूल सल्लल्लाहु तआला

अलैहि वसल्लम का बोसह लेने का शर्फ़ हासि हुवा वह सफ़ेद न हुए हमेशा सियाह ही रहे और मेरी ज़बान में लुकनत थी आप ने अपना लुआबे दहन डाल दिया तो लुकनत जाती रही और मेरी ज़बान हमेशा के लिए ठीक हो गई।

मोजिज़ ए लुआबे दहन (४)

रसूले गिरामी वक़ार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के लुआबे दहन से खारा पानी मीठा हो जाता था हज़रते सय्यदुना अनस रज़ि यल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मेरे घर में एक कुआँ था जिस का पानी खारा था, एक मरतबा साहिबे लौलाक फ़ख़्रे मौजूदात जनाबे मुहम्मदुर्ररसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए और मेरे घर के कुएं के पानी में अपना लुआबे दहन डाल दिया जिससे कुएं का पानी ऐसा ठंडा और मीठा हो गया कि सारे मदीने में ऐसा शीरीं और ठंडा पानी न था।

मोजिज़ ए लुआबे दहन (५)

हज़रते ख़ुबैब रज़ि यल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि मैं अपनी कौम के एक शख़्स के साथ एक ग़ज़वह में नबि ए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुवा हमने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हम इस ग़ज़वह में शरीक होनेकी ख़्वाहिश रखते हैं।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़ ़ाया क्या तुम इस्लाम ले आए हो मैं ने अर्ज़ क्या क़ि नहीं तो आप ने फ़रमाया हम मुश्रिकों के ख़िलाफ़ मुश्रिकों की

मदद नहीं लेते हैं हज़रते खुबैब रज़ि यल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैं ने इस्लाम कुबूल कर लिया और आका ए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के हमराह जिहाद में शरीक हुवा तलवारें चमकीं नेज़े व भाले उठे, खनजर चले तीरों की बारिश हुई इस घमसान की जंग में दुश्मने दीन की तलवार मेरे कंधे पर पड़ी जिस से मेरा बाजु कट कर लटक गया मैं तबीबे दो जहाँ सरवरे सरवराँ ताजदारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाहे बेकस पनाह में हाज़िर हुवा आप ने मेरे बाजू पर लुआबे दहन लगाया और उस की जगह जोड़ दिया मेरा कटा हुवा बाजू अपनी जगह जुड़कर ठीक हो गया फिर उस शख़्स को क़त्ल करके उस की बेटी से निकाह कर लिया जिसने मुझ पर तलवार से हमला किया था।

मोजिज़ ए लुआबे दहन (६)

हजरते अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि यल्लाहु अन्हु का बयान है कि ग़ज़्व ए बद्र के दिन मैं मुजाहेदीन की सफ़ में खड़ा था और मेरे दोनों जानिब दो नौ उम्र लड़के खड़े थे उन में से एक ने राज़दारी से पूछा **या अम्मे अरिनी अबी जहलिन** (बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम स. 568) ऐ चचा जान क्या आप अबू जहल का पता बता सकते हैं? दूसरे नौ जवान ने भी यही पूछा मैं ने उस से कहा कि क्यों? भतीजे तुम को अबू जहल से क्या काम है उस पर उन्होंने बड़ी बे बाकी और बे ख़ौफ़ी से कहा चचा जान यही तो वह खूंख़्वार बद बख़्त ज़ालिम है जिस की शर अंगेज़ी इस दरजह को पहुंच चुकी है कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को गालियाँ तक देता है वह अल्लाह के रसूल का बहुत बड़ा

दुश्मन है हम ज़रूर उस पर हमला आवर होंगे।

हज़रते अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि यल्लाहु अन्हु नेअबू जहल की निशानदेही कर दी फिर क्या था दोनों बच्चे शहबाजों की तरह अबू जहल पर झपट पड़ते हैं यहाँ तक कि अपनी तलवारों से मार मार कर अबू जहल को शदीद ज़ख़्मी कर देते हैं यह दोनों हज़रते मऊज़ और मआज़ रज़ि यल्लाहु अन्हुमा थे जो इफ़रा के बेटे थे अबू जहल के बेटे अकरमह ने अपने बाप के इन्तिक़ाम में हज़रते मआज़ पर हमला कर दिया (अकरमह उस वक़्त हालते कुफ़्र में थे) सामने मुक़ाबला करने की हिम्मत न हुई तो पीछे से हज़रते मआज़ के बायें शाना पर तलवार पूरी ताक़त से मारी जिस से उन का बाज़ू कट कर लटक गया हज़रते मआज़ अकरमह का पीछा करके दूर तक दौड़ाते रहे मगर वह बच निकला हजरते मआज़ इस हालत में भी दुश्मनाने दीनो इस्लाम से लड़ते रहे बढ़ बढ़ कर हमला करते रहे लेकिन कटे हुए बाज़ू के लटकने से ज़ैहमत हो रही थी उन्हों ने अपने कटे हुए हाथ को पाओं के नीचे दबा कर उसे जोर से खींचा कि तसमह अलग होगया फिर वह आजादी से लड़ते रहे।

और आख़िर में कटे हुए बाज़ू को हाथ में उठाये हुए बारगाहे रिसालत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम में हाज़िर हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना लुआबे दहन लगाकर बाज़ू को उसी जगह जोड़ दिया और पहले ही की तरह बिल्कुल दुरूस्त हो गया।

मोजिज़ ए लुआबे दहन (७)

हज़रते जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि यल्लाहु अन्हु की मेज़बानी का वाक़ेअह इमाम बुख़ारी व मुस्लिम व दीगर

मुहद्दिसीन ने रिवायत किए हैं।

ग़ज़व ए ख़न्दक़ की तैयारी के मौक़ा पर जब हज़रते जाबिर रज़ि यल्लाहु अन्हु सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शिकमे मुबारक को कमर से चिमटा हुवा देख कर महसूस करते हैं कि आप फ़ाक़ा से हैं और भूक की वजह से आप की यह हालत हो गई 'हज़रते जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि यल्लाहु अन्हु अर्ज़ करते हैं कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अगर आप की इजाज़त हो तो मैं घर तक हो आऊँ सरकार इजाज़त मरहमत फ़रमा देते हैं' घर आकर बीवी से कहा, मैं ने आक़ा ए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को सख़्त फ़ाक़ा की हालत में देखा है क्या तेरे पास हुज़ूर की बारगाह में पेश करने के लिए कुछ है?उस नेक बख़्त ख़ातून ने कहा इस वक़्त थोड़ा सा जौ है और एक बकरी का बच्चा है इस के इलावह कोई चीज़ ऐसी नहीं है जिस से सरकार की मेहमान नवाज़ी का शर्फ़ हासिल किया जासके।

हज़रते जाबिर रज़ि यल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने उस बकरी के बच्चे को ज़िबह करके गोश्त पकने के लिए हाँडी में डालकर चूल्हे पर रख्खा और मेरी बीवी ने जौ पीस कर रोटी पकाने की तैयारी शुरू करदी और मैं हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर होने के लिए मैदाने जंग में जाने लगा 'मेरी बीवी ने मुझ से कहा कि हुज़ूर के सहाबा के रू बरू मुझे शरमिन्दह न करना मैं ने जब सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर चुपके से अर्ज़ की या रसूलल्लाह हमारे पास बकरी का एक छोटा सा बच्चा है और एक सा जौ का आटा, हुज़ूर ख़ुद भी तशरीफ़ ले चलें और अपने हमराह दस सहाबा को और एक दूसरी रिवायत में है कि उन्हों ने अर्ज़ की हुज़ूर के लिए थोडे से खाने का

इन्तिज़ाम किया है लिहाज़ा दो एक सहाबा के साथ तशरीफ़ ले चलें।

हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया कि अपनी बीवी से कहो जब तक मैं न पहुंचूँ चूल्हे से हाँडी को न उतारना और तन्दूर से रोटी न निकालना, यह कह कर हज़रते जाबिर को घर रवाना किया फिर तमाम लशकर में एलान करवा दिया कि ऐहले ख़न्दक़ आज जाबिर बिन अब्दुल्लाह के यहाँ सब की दावत है चुनांचे सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म के साथ मुहाजेरीन व अंसार जाबिर के घर की तरफ़ रवाना हो गए हज़रते जाबिर नेअपनी जौ़जह से बताया कि हुजूर तो तमाम लशकरे इस्लाम अपने साथ लेकर तशरीफ़ ला रहे हैं इस्लाम की उस नेक बख़्त खा़तून ने कहाः **अल्लाहु व रसूलहू नहनू अख़्बरनाहु बिमा इन्दनाः** अल्लाह और उस के रसूल ख़ूब जानते हैं कि हमारे पास क्या है हमारी हालत कैसी है फिर जब हुज़ूर तशरीफ़ लाए तो गूंधा हुवा आटा पेश कर दिया सरकार ने उस में अपना थूक शरीफ़ डाला और बरकत की दुआ फ़रमाई उस के बाद हज़रते जाबिर को हुक्म दिया कि रोटी पकाने वाली औरतों को बुला लाओ जो तुम्हारी बीवी के साथ मिलकर रोटी पकाएं फिर आप ने हज़रते जाबिर से बताया कि मेरे साथ एक हजा़र आदमी आये हैं गोश्त की हाँडी को चूल्हे से मत उतारना वहीं से बरतनों में सालन डालते जा़ना हज़रते जाबिर कहते हैं कि मैंने ऐसा ही किया सहाब ए किराम बारी बारी आते गए और पेट भर खाना खाकर जाते रहे और जिस क़दर आटा पहले था उतना ही बाकी़ रहा और हाँडी का सालन भी कम न हुवा 'ऐसा लगता था जैसे किसी ने एक चमचह भी सालन नहीं निकाला फिर सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ जाबिर तुम खु़द खाओ और पड़ोसियों रिश्तेदारों में बतौरे हदि़यह तक़सीम कर

दो हज़रते जाबिर फ़रमाते हैं कि हम सारा दिन खाते रहे खिलाते रहे और बाँटते रहे।

मोजिज़ ए लुआबे दहन (८)

हज़रते सय्यदुना अबू क़तादह रज़ि यल्लाहु अन्हु जिन का अस्ल नाम हारिस बिन रुबइल अंसारी अस्लमी है एक जंग के मौक़ा पर उन्हें तीर लगा और ज़ख़्म काफ़ी गहरा और ख़तरनाक था रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाहे नाज़ में हाज़िर हुए और अर्ज़ करते हैं या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे दुश्मन के तीर ने ज़ख़्मी कर दिया है, हुजूर अपना लुआबे दहन शरीफ़ उन के ज़ख़्मों पर लगा देते हैं जिस की बरकत से न दर्द रहा न ज़ख़्म में ख़ून या पीप, ज़ख़्म बिलकुल दुरूस्त हो गया।

मोजिज़ ए लुआबे दहन (९)

क़ाज़ी अयाज़ लिखते हैं कि कुलसूम बिन हसीन रज़ि यल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक मौक़ा पर मेरी गरदन पर तलवार की ज़र्ब लगी मैं रहमते आलम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमते बा बरकत में हाज़िर हुवा आप ने अपना लुआबे दहने मुबारक मेरी गरदन के उस गैहरे ज़ख़्म पर मल दिया जिस से उसी वक़्त मेरा ज़ख़्म दूरूस्त हो गया और मैं मुकम्मल सिहत याब हो गया।

मोजिज़ ए लुआबे दहन (१०)

सहाबि ए रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रते अब्दुल्लाह अनीस रज़ि यल्लाहु अन्हु फ़रमातेहैं कि एक ग़ज़वा

में मेरे सर पर तलवार का ज़ख़्म आया और मैं दर्द से तड़प उठा अपने आका व मौला सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में हाज़िर हो कर अपना ज़ख़्म दिखाया हुज़ूर अनवर शफ़ी ए महशर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना लुआबे दहन ज़ख़्म पर डाल दिया तो उस की बरकत से सारा ज़ख़्म जो कि जान लेवा था मुंदमिल हो गया यहाँ तक कि उस ज़ख़्म का निशान भी बाकी ना रहा।

मोजिज़ ए लुआबे दहन (99)

हज़रते उतबह बिन फ़रक़द रज़ि यल्लाहु अन्हु के बदन से बड़ी दिलकश और दिल आवेज़ ख़श्बू आती थी जिस मजलिस में तशरीफ़ ले जाते थे तो लोग तअज्जुब से पुछते थे कि ऐ उतबह कौन सा इत्र इस्तेमाल करते हो जिस की ख़श्बू हमारे इत्र की ख़ुश्बू को माँद कर देती है। उतबह की तीन बीवियां थीं हर एक की ख़्वाहिश यही रहती थी कि जो भी इत्र इस्तेमाल करे वह दूसरी दो सौकनों से ज़्यादह ख़ुश्बू दार हो हर बीवी बेहतर से बेहतर ख़ुश्बू लगाने में कोशां रहती थीं।

लेकिन हज़रते उतबह ने कभी ख़ुश्बूकेलिए किसी इत्र का इस्तेमाल नहीं किया था इस के बा वजूद उनके बदन से फूटने वाली कस्तूरी की महक के मुक़ाबले उन की बीवियों की इत्र व ख़ुश्बू की कोई हक़ीक़त न थी एक मरतबा उन की एक ज़ौजह उम्मे आसिम ने उन से पूछा कि क्या वजह है आप ख़ुश्बू भी नहीं लगाते लेकिन आपके जिस्म से जो ख़ुश्बू निकलती है उसके सामने सारे इत्र और कस्तूरियाँ बेकार हैं।

इस में राज़ क्या है आप हमें बताइये? आप ने उम्मे आसिम से कहना शुरू किया कि बचपन में मेरे जिस्म में छोटे छोटे दाने निकल आए थे जिस से बदन में खुजलाहट पैदा हो गई थी।

मैं तबीबे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में हाज़िर हुवा हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे अपने सामने बैठने का हुक्म दिया फिर मेरे कपड़े उतरवा दिये और अपनी एक हथेली मुबारका पर लुआबे दहन रखकर दूसरी से मला उस के बाद अपने दस्ते अक़दस को मेरी पीठ और मेरे पेट पर फेर दिया यह उस की बरकत है कि हमेशा मेरे जिस्म से ऐसी ख़ुश्बू निकलती रहती है जिसका मुक़ाबला कोई दूसरी ख़ुश्बू हरगिज़ नहीं कर सकती।

(दलाइलुन्नबुव्वह जिल्द 6, स.133)

मोजिज़ ए लुआबे दहन (१२)

इमाम बहेक़ी ने दलाइलुन्नबुव्वह जिल्द 6, सफह176 पर रिवायत नक़्ल की है कि मुहम्मद बिन हातिब की वालिदह उम्मे जमील बयान करती हैं कि ऐ मुहम्मद बिन हातिब मैं तुम्हें मुलके हबशह से लेकर आई तो मदीना तय्यबह से एक या दो रातों के फ़ासिले पर क़याम किया और तुम्हारे लिए खाना पकाने लगी उसी दरमियान लकड़ियां ख़त्म हो गई मैं लकड़ियां लेने केलिए चली गई तो तुम ने उबल्ती हुई हंडिया को पकड़ कर अपनी तरफ़ खींचा तो वह हाँडी तुम्हारी कलाई पर गिर गई जिस से तुम्हारा हाथ जल गया मैं मदीना आलिया में हाज़िर हुई तो तुम्हें चारह साज़े दर्द मंदाँ जनाबे मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश कर दिया और अर्ज़ किया यह मुहम्मद बिन हातिब हैं और यह पहला बच्चा है जिसका नाम आपके नामे अक़दस पर रख्खा गया है।

आप ने तुम्हारे सर पर दस्ते शफ़क़त रख्खा और बरकत की दुआ फ़रमाई उस के बाद तुम्हारे हाथ पर लुआबे दहन

डाला और देर तक मलते रहे साथ ही साथ दुआ मांगते रहे, ऐ तमाम इन्सानों के रब, इस से इस तक्लीफ़ को दूर फ़रमा कर शिफ़ा अता फ़रमा बेशक तूही शिफ़ा देने वाला है शिफ़ा सिर्फ़ तेरी ही शिफ़ा है ऐसी शिफ़ा अता फ़रमा जो किसी बीमारी को बाक़ी ना रहने दे।

उम्मे जमील फ़रमाती हैं ऐ मेरे बेटे जिस वक़्त मैं तुम को लेकर उठी,तो तुम्हारा हाथ बिल्कुल ठीक हो चुका था और जलन और दर्द की तक्लीफ़ से तुम को निजात मिल गई थी।

मोजिज़ ए लुआबे दहन (93)

हज़रते सय्यदुना अनस बिन मालिक रज़ि यल्लाहु अन्हु का बयान है कि ज़ैद बिन अरक़म रज़ि यल्लाहु अन्हु की आँख में दर्द था एक रोज़ मैं अयादतके लिए गया तो देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी तशरीफ़ फ़रमा हैं आपने अपना लुआबे दहन ज़ैद इब्ने अरक़म की आँख में डाल कर दुआ फ़रमाई तो उन की आँख फ़ौरन ठीक हो गई सुबह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अहैहि वसल्लम के पास आए आप ने पूछा ज़ैद तुम्हारा क्या हाल है?अगर तुम्हारी आँखें वैसी ही रहतीं तो किया होता? उस पर ज़ैद इब्ने अरक़म ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मैं सब्र करत और सब्र का फल मीठा होता है उसे हासिल करता आप ने फ़रमाया क़सम है अल्लाह तआला की जिस के क़बज़ ए कुदरत में मेरी जान है अगर तुम्हारी आँखें उसी तरह रहतीं और तू सब्र करता तो अल्लाह के पास बख़्शा हुवा पहुँचता।

(शवाहिदुन्नबुव्वह स.212)

मोजिज़ ए लुआबे दहन (94)

हज़रते शुरहबील जोफ़ी रज़ि यल्लाहु अन्हु का बयान है

कि मैं एक दफ़ा सरकारे बतहा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुवा मेरे हाथ पर एक फोड़ा था मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इस फोड़े से मुझे सख़्त तक्लीफ़ है न तो मैं तलवार का दस्ता पकड़ सकता हूँ और न ही घोड़े की लगाम, आप ने मुझे अपने पास बिठाकर कहा इसे खोलो मैंने खोल दिया तो आप ने लुआबे दहन लगा दिया जिस से मेरा हाथ इस क़दर सिहत याब हो गया कि मुझे पता न चलता कि दर्द कहाँ है और फोड़ा किस जगह था। (शवाहिदुन्नबुव्वह स.213)

मोजिज़ ए लुआबे दहन (१५)

सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में कुछलोग एक कुंए से एक डोल पानी लेकर आए आप ने उस डोल से थोड़ा पानी पिया और उस में अपना लुआबे दहन डाल दिया फिर उस डोल को उस कुंए में डाल दिया गया जिस से उस कुंए से ख़ुश्बू आने लगी।

(शवाहिदुन्नबुव्वह स.237)

मोजिज़ ए लुआबे दहन (१६)

यजीद बिन अबी उबैद रज़ि यल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रत सलमह रज़ि यल्लाहु अन्हु की पिंडली पर तलवार के ज़ख़्म का निशान देखा तो उन से पूछा कि ऐ सलमह यह निशान कैसा है? उन्होंने फ़रमाया यह ज़ख़्म मुझे ख़ैबर के दिन दौराने जंग लगा था और ऐसा कारी ज़र्ब था कि लोगों ने कहना शुरू किया कि सलमह शहीद हो गए मैं रसूले गिरामी वक़ार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुवा तो आप ने तीन मरतबा इस ज़ख़्म पर

अपना लुआबे दहन लगाया उस के बाद आज तक मुझे इस ज़ख़्म में कोई तकलीफ़ नहीं हुई इस हदीस को बुख़ारी शरीफ़ में इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह ने इसी तरह रिवायत किया है। (बहवालाः कुकारो या रसूलल्लाह स. 197)

मोजिज़ ए लुआबे दहन (१७)

जंगे हुनैन के दिन हज़रते सय्यदुना ख़ालिद बिन वलीद मख़्ज़ूमी रज़ि यल्लाहु अन्हु इस क़दर ज़ख़्मी हो जाते हैं कि ज़ख़्मों की ताब न लाकर निढाल हो गए तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कौन है? जो हमैं ख़ालिद बिन वलीद की क़याम गाह पर लेचले एक सहाबी ने उस जगह की निशानदेही की जहाँ हज़रते सैफुल्लाह रज़ि यल्लाहु अन्हु क़याम पज़ीर थे आप ने उन्हें देखा कि कजावे के पिछले हिस्से के साथ टेक लगाकर बैठे हुए हैं आप ने उन के ज़ख़्म पर लुआबे दहन लगाया तो वह तन्दरूस्त हो गए और सारे ज़ख़्म ख़ुद बख़ुद मुंदमिल हो गए।
(अलमुसनद,5/ 465: बहवाला पुकारो या रसूलल्लाह)

मोजिज़ ए लुआबे दहन (१८)

ग़ज़व ए ख़न्दक़ के रोज़ हज़रते अली बिन हिकम रज़ि यल्लाहु अन्हु की कलाई टूट गई तो वह सीधा रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में तशरीफ़ लाते हैं और कहते हैं कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मेरी कलाई टूट गई है तो आप ने हज़रते अली बिन हिकम की टूटी हुई कलाई पर अपना लुआबे दहन लगा दिया जिस से वह उसी वक़्त भले चंगे हो गए और अपने घोड़े की पीठ से उतरे भी नहीं। (हवालाः साबिक़ स.

198 ख़साइसे कुबरा स. 169 में पिंडली बताया गया है)

मोजिज़ ए लुआबे दहन (१९)

हज़रते ज़ैद बिनमआज़ रज़ि यल्लाहु अन्हु कि पिंडली पर एक दुश्मने खुदा की तलवार लगी और टख़्ने तक ज़ख़्मी कर गई तो वह सीधा बारगाहे रिसालत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम में पहुँच कर अपनी ज़ख़्मी पिंडली को दिखाते हैं, सरकारे अबद क़रार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हज़रते ज़ैद बिन मआज़ रज़ि यल्लाहु अन्हु के पिंडली पर अपना लुआबे दहन लगाते हैं जिस से ज़ख़्म फ़ौरन ठीक हो जाता है और वह तन्दरूस्त हो जाते हैं (हवालाः साबिक़)

मोजिज़ ए लुआबे दहन (२०)

हज़रते मुहम्मद बिन इब्राहीम बयान करते हैं कि एक शख़्स को हादि ए कौनैन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में लाया गया जिस के पाओं में ऐसा ज़ख़्म था जिस ने तबीबों को आजिज़ कर दिया था मसीहा ए ज़मन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपनी उंगली अपने लुआबे दहन पर रख्खि फिर आप ने छंगुली का किनारा मिट्टी पर रख्खा फिर उसे उठा कर 'उस शख़्स के ज़ख़्म पर रख्खा और दुआ की ऐ अल्लाह तेरे नाम से हम में बाज़ का लुआबे दहन (थूक) हमारे बीमार को शिफ़ा देगा उस का ज़ख़्म फ़ौरन ठीक होगया, इसी सिलसिले में हज़रते सालेह शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैह ने शेर कहा है जिस का तर्जुमह यह है कि जिस सहाबी के ज़ख़्म पर नबि ए मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने लुआबे दहन लगाया तो उस से ख़ून जारी नहीं हुवा और जिस पर लुआबे दहन नहीं लगाया उस की

शिफ़ा में ताख़ीर और दूरी हो गई। (सहीह बुख़ारी बहवाला पुकारो या रसूलल्लाह)

मोजिज़ ए लुआबे दहन (२१)

रिवायत है कि एक ग़ैर मुस्लिम के बेटे को इस्तिस्क़ा की बीमारी लाहिक़ हो गई तो उस ग़ैर मुस्लिम ने अपना एक नुमाइन्दा नबि ए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़िदमते बा बरकत में भेजा सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने ज़मीन से थोड़ी सी मिट्टी उठाई और उस पर फूँक मारने के आंदाज़ में लुआबे दहन डाला और उस नुमाइन्दे को दे दी उस नुमाइन्दे ने हैरतो इस्तिजाब की हालत में यह समझते हुए मिट्टी लेली कि उस के साथ मज़ाक़ किया गया है और जाकर उस ग़ैर मुस्लिम के बेटे को देदी उस बीमार ने पानी में डाल कर पीली तो अल्लाह तआला ने उस को शिफ़ा अता फ़रमादी। (हवाला साबिक़)

मोजिज़ ए लुआबे दहन (२२)

हज़रते सय्यदुना उसामा बिन ज़ैद रज़ि यल्लाहु अन्हुमा रिवायत बयान करते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के हमराह हज के लिए निकले जो आप ने अदा फ़रमाया जब आप बतनुर्रूहा (एक वादी का नाम है) में पहुँचे तो हम ने देखा की एक औरत सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तरफ़ आ रही है आप ने अपनी ऊँटनी रोकली जब वह क़रीब पहुँची तो कहने लगी या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम क़सम है उस ज़ाते अक़दस की जिस ने आप को हक़ के साथ मबऊस फ़रमाया मेरा यह बेटा जिस वक़्त

से पैदा हुवा है होश में नहीं आया।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उस बच्चे को औरत से ले लिया और उसे अपने सीन ए मुबारक और पालान के अगले हिस्से के दरमियान रख लिया फिर उस के मुँह में अपना लुआबे दहन टपकाया और फ़रमाया ओ दुश्मने ख़ुदा निकल जा सुनले कि मैं अल्लाह तआला का रसूल हूँ सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम।

हज़रते उसामा फ़रमाते हैं फ़िर बच्चा उस औरत को यह कहते हुए दे दिया! इसे पकड़ले अब इसे कोई ख़तरह नहीं है।

हज़रते उसामा फ़रमाते हैं कि रसूले गिरामी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हज अदा करने से फारिग़ हो कर वापस तशरीफ़ लाए और जब बतनुर्रूहा में उतरे तो वही औरत एक बकरी भून कर लाई और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मैं उस बच्चे की माँ हूँ जिसे आप ने सफ़रे मुबारक के मौक़ा पर तन्दरूस्त फ़रमाया था आप ने फ़रमाया! बच्चे का क्या हाल है उस ने अर्ज़ किया क़सम है उस ज़ाते अक़दस की जिस ने आप को हक़ के साथ भेजा है उस के बाद बच्चे की तरफ़ से परेशान करने वाली कोई चीज़ नहीं पाई गई।

(पुकारो या रसूलल्लाह स. 206)

☆☆☆

मोजिज़ ए लुआबे दहन (२३)

बहेक़ी व अबू नुइभ ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बाँदी ज़रीना से रिवायत की कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने यौमे आशूरा को मक्का के शीरख़्वार ब्च्चों का और सय्यदह फ़ातिमा रज़ि यल्लाहु

अन्हा के शीरख़्वार बच्चों को बुलाया और उन के दहनों में अपना लुआबे दहन डाला और उन की माओं से फ़रमाया रात तक इन्हें दूध न पिलाना गोया इन को रात तक दूध की ज़रूरत न होगी। (ख़साइसे कुबरा अव्वल स. 157)

मोजिज़ ए लुआबे दहन (२४)

तिबरानी ने उमेरह बिन्ते मसऊद रज़ि यल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की है कि वह ख़ुद और उन की बैहनें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पास बैअत के लिए हाज़िर हुई और हम पाँच बैहनें थीं, तो उन्हों ने हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को क़दीद खाते पाया (सुखाया हुवा गोश्त) आप ने चबाया हुवा थोड़ा सा क़दीद मुझको इनायत फ़रमाया हम सब ने उस में से बाँटकर खा लिया, मेरे इलावह वह सब बैहनें अगरचे वफ़ात पाचुकी हैं मगर किसी के मूँह में कभी बदबू न पाई गई।

मोजिज़ ए लुआबे दहन (२५)

तिबरानी नेअबू उमामह से रिवायत की कि एक मरतबह एक बद ज़बान औरत हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पास आई हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम उस वक़्त क़दीद तनावुल फ़रमा रह थे उस औरत ने कहा क्या आप मुझे इनायत फ़रमाएंगे? हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपने बरतन में से लेकर उस की तरफ़ बढ़ाया औरत ने कहा यह मुझे न चाहिये बल्कि मुँह के अंदर से दीजिए लिहाजा हुजूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने दिया 'उस ने मुँह में रख्खा और

निगल गई उस के बाद कभी ना शाइस्तह बात उस औरत की ज़बान से किसी ने न सुनी (ऐज़न)

मोजिज़ ए लुआबे दहन (२६)

बहेक़ी ने अम्र बिन शैबह की सनद के साथ अबू उबैद नख़वी से रिवायत की कि आमिर बिन कुरेज़ अपने पाँच साला बेटे अब्दुल्लाह के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आए हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उस के मुँह में अपना लुआबे दहन डाल दिया जिस से ऐसी करामत उन को मिली कि वह जिस पत्थर पर ज़र्ब लगाते पानी निकल आता।(ऐज़न)

मोजिज़ ए लुआबे दहन (२७)

बहेक़ी ने मुहम्मद बिन साबित से रिवायत की, कि उन के वालिद ने जमीला बिन्ते अब्दुल्लाह बिन उबई को छोड़ दिया था और मुहम्मद बिन साबित उन के पेट में थे जब मुहम्मद की विलादत हुई तो जमीला ने क़सम खाई कि वह बच्चे को दूध न पिलाएगी तो हुज़ूर सरवरे कायेनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने नो मौलूद मुहम्मद को मंग्वा कर अपना लुआबे दहन उस के मुँह में डाल दिया और रोज़ाना लाने की हिदायत की और फ़रमाया अल्लाह इस का रज़्ज़ाक़ है लिहाजा़ हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में उन को दूसरे या तीसरे दिन लाया जाता अचानक अरब की एक ख़ातून साबित बिन क़ैस को दरयाफ़्त करती हुई आई मैं ने उस से मक़सद दरयाफ़्त किया तो उस ने बताया कि आज रात मैं ने ख़्वाब में देखा है कि मैं साबित के बच्चे को जिस का नाम मुहम्मद है दूध पिला रही हूँ साबित ने

उसे बताया कि यह मेरा ही नाम है और यह मेरा बच्चा मुहम्मद है। (ऐज़न –157,158)

मोजिज़ ए लुआबे दहन (२८)

इब्ने असाकिर ने अबू जाफ़र से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पास हज़रते हसन रजि यल्लाहु अन्हु मौजूद थे। कि उन्हें प्यास लगी और तिश्नगी बढ़ती ही गई पानी उस वक़्त मौजूद न था चुनाँचे हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपनी ज़बान मुबारक उन के मुँह में देदी उन्होंने उस को चूसा हत्ता कि वह सैराब हो गए और तिश्नगी दूर हो गई।(ऐज़न–158)

मोजिज़ ए लुआबे दहन (२९)

तिबरानी व इब्ने असाकिर ने हज़रते अबू हुरैरा रज़ि यल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि हम रसूलुल्लाहु सल्लल्लाह तआला अलैहि वसल्लम के हमराह जा रहे थे कि रास्ते के एक जानिब से हसन व हुसैन रज़ि यल्लाहु अन्हुमा के रोने की आवाज़ सुनी, वह दोनों अपनी माँ के साथ थे हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तेज़ चल कर उन के क़रीब पहुँचे और फ़रमाया यह क्यों रो रहे हैं? हज़रते फ़ातिमा रज़ि यल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया प्यासे हैं फिर आप ने पानी मँगवाया लेकिन कहीं दस्तियाब नहीं हुवा उस के बाद हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने एक बच्चे को माँगा तो सय्यदह फ़ातिमा रज़ि यल्लाहु अन्हा ने बमोजिबे इरशाद एक बच्चे को आपकी गोद में दे दिया आप ने लेकर सीने से चिमटाया मगर वह बराबर चीख़्ते रहे और ख़ामोश न

हुए उसके बाद आप ने ज़बाने मुबारक उन के मुँह में देदी वह चूसने लगे और क़रार आगया उस के बाद दूसरे बे क़रार रोते बच्चे को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने तलब फ़रमाया और उन के साथ वही अमल क्या हत्ता कि दूसरा फ़रज़न्द भी खामोश हो गया (ऐज़न)

मोजिज़ ए लुआबे दहन (30)

इब्ने इस्हाक़ और बहेक़ी ने हज़रते अली रज़ि यल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि जब आयते करीमाः **व अनजिर अशीरतकल अक़रबीन** नाज़िल हुई तो उस के बाद आप ने फ़रमाया "एक बकरी के पाए और एक सा ग़ल्ला का तआम तैयार करो और एक क़दह (प्याला) दूध भी रख्खो" फिर अक़रूबा यानी औलादे अब्दुल मुत्तलिब को बुलालो "तो मैंने तामील की और वह सब आगए जिन की तादाद 29/40 या 41 थी उन लोगों में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के चचा यानी हज़रते अब्बास और अबू लहब भी मौजूद थे मैं ने उन के सामने गोश्त का बड़ा प्याला रख्खा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उस में से एक बोटी ली और दाँतों से तोड़ कर प्याले में बिखेर दी और फ़रमाया बिस्मिल्लाह कर के शुरू की जिए, तो सब महमानों ने सैर हो कर खाना खाया मगर तक़रीबन वैसाही मौजूद था जैसे पहले था उस के बाद फ़रमाया अली! सब को दूध पिलाओ तो मैं प्याला लाया जिस में सब ने सैर होकर प्या हालाँकि वह दूध मिक़दार में सिर्फ़ एक शख़्स के लिए ही काफ़ी था उस के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने दावते इस्लाम पेश की (ऐज़न स. 279,280)

मोजिज़ ए लुआबे दहन (31)

बहेकी और अबू नुईम ने बतरीके उरवह और बतरीके मूसा बिन अक़बह हज़रते शहाब से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हज़रते अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि यल्लाहु तआला अन्हु को तीस सवारों पर अमीर बना कर जिन में हज़रते अब्दुल्लाह बिन अनीस भी थे यसीर बिन रेज़ाम यहूदी की तरफ़ भेजा यसीर ने हज़रते अब्दुल्लाह बिन अनीस के चेहरे पर ऐसा ज़ख़्म लगाया जिस का असर दिमाग़ तक पहुंचा हज़रते इब्ने अनीस रज़ि यल्लाहु अन्हु हुजूर सल्लल्लाहु तआला अहैहि वसल्लम की ख़िदमत में लाए गए आप ने उन के उस गहरे और बड़े ज़ख़्म पर लुआबे दहन लगाया जिस से वह मुन्दमिल हो गया। (ऐज़न स.492)

मोजिज़ ए लुआबे दहन (32)

अरैशाती ने अबू उबैदह रज़ि यल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि अक़अस बिन सलमह बनी सहीम के वफ़द में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पास आए और उन्होंने इस्लाम कुबूल किया जब वह लोग अपनी क़ौम की तरफ़ वापस होने लगे तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उन को हुक्म दिया कि वह अपनी क़ौम को दावते इस्लाम दें और उन्हें पानी का एक मशकीज़ह दिया जिस में हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने लुआबे दहने अक़दस या कुल्ली का पानी डाला था और फ़रमाया इसे बनी सहीम के पास ले जाओ और इस मशकीज़ह के पानी को अपनी मस्जिद में छिड़क दो उस वक़्त अपने सरों को ऊँचा रखना चाहिये इसलिए कि अल्लाह तआला ने उन्हें ऊँचा किया है रावि का ब्यान है कि उन लोगों में से न तो किसी ने मुसैलेमा

कज़्ज़ाब की पैरवी की और न उन में से कोई भी खारजी बना। (ऐज़न जि.2स.66)

मोजिज़ ए लुआबे दहन (33)

यह वाकेअह उसवक्त का है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मदीनह मुनव्वरह हिजरत करके तशरीफ़ ले जा चुके थे चुनाँचे राशिद रज़ि यल्लाहु अन्हु भी रवाना हुए और मदीनह मुनव्वरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पास आए और मुसलमान होकर आप की बैअत की उस के बाद राशिद ने रोहात में ज़मीन का कि़तअ (टुकड़ा) माँगा और हुजूर सल्लल्लाहु तआला अहैहि वसल्लम ने उन्हें अता फ़रमाया और एक मश्कीज़ह पानी का भरा हुवा इनायत फ़रमाया और उस में आप ने लुआबे दहने अक़दस डाला और उन से फ़रमाया इस के पानी को उस कित ए ज़मीन के बालाई हिस्से में बहादेना और उस के बकि़या पानी से लागों को मना ना करना तो उन्होंने जाकर ऐसा ही किया और वह पानी वाफि़र तौर पर आज तक जारी व बाकी़ है और उस कितए ज़मीन पर उन्होंने खुजूर के दरख़्त लगाए लोग कहते हैं कि रुहात की सारी आबादी उस चश्में से पानी पीती है और लोग उस का नाम " माउर्रसूल" (रसूल का पानी) पुकारते हैं और रुहात के लोग उस पानी से गुस्ल करते और शिफा़याब होते हैं (ऐज़न स. 87)

मोजिज़ ए लुआबे दहन (38)

इमाम अहमद व इब्ने सअद और हाकिम ने ब सनदे सहीह और बेहकी़ ने याली बिन मुर्रह रज़ि यल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि मक्कह मुकर्रमह के सफ़र मे मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

तआला अलैहि वसल्लम के साथ था दौराने सफ़र हम एक मरतबह मंज़िल में थे वहाँ एक अजीब बात देखी कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उन दोनों दरख़्तों के पास जाओ और उनसे कहो कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तुम दोनों को हुक्म फ़रमाते हैं कि आपस में मिल जाओ मैं गया और मैं ने उन दोनों दरख़्तों से ऐसा ही कहा फ़ौरन दरख़्तों ने जुंबिश की और ज़मीन से अपनी जड़ों को निकाला और दोनों चलकर एक दूसरे से मिल गए और हुज़ूर ने उन के पर्दे में रफ़अे हाजत की उस के बाद फ़रमाया इन दरख़्तों से कह दो कि दोनों अपनी अपनी जगह वापस चले जाएं मैंने उन से कहा तो उन्हों ने जुंबिश कि और हर एक अपनी अपनी जगह जाके खड़ा हो गया फिर एक औरत आई और उस ने कहा यह मेरा बच्चह सात साल से शैतान के चंगुल में है और जो रोज़ाना दिन में दो मरतबह इस के पास आता है हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बच्चह को मेरे क़रीब लाओ फिर हुज़ूर ने बच्चह के मुँह में लुआबे दहने अक़दस डाला और फ़रमाया ओ दुश्मने ख़ुदा निकल जा, मैं अल्लाह का रसूल हूँ उस के बाद हुज़ूर ने फ़रमाया जब हम सफ़र से वापस आयें तो हमैं बताना कि इस का क्या हाल है? चुनाँचे हम सफ़र से वापस आये तो वह औरत हुज़ूर के पास आई और उस ने कहा क़सम है उस ज़ात की जिसने आप को मुकर्रम बनाया जब से हम हुज़ूर के पास से गए हैं अब तक हमने इस पर दीवांगी का क़ोई असर न देखा (ऐज़न स.98)

मोजिज़ ए लुआबे दहन (35)

इमाम अहमद व इब्ने अबी शैबा और बहेकी व तिबरानी व

अबू नुइम ने बतरीक़े सुलेमान बिन अम्र बिन अहवस ने अपनी वालिदह उम्मे जुंदब रज़ि यल्लाहु अन्हा से रिवायत की उन्हों ने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को जमरतुल अक़बा के पास कंकरियाँ मारते हुए देखा है और लोग कंकरियाँ मार रहे थे जब वापस तशरीफ़ लाए तो एक औरत आई उस के साथ उस का बेटा था जिसे आसेब था 'उसने कहा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मेरे इस बेटे पर बला है यह बात नहीं करता हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने पानी लाने का हुक्म फ़रमाया तो वह औरत पत्थर के बरतन में पानी लाई हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उसे अपने दस्ते मुबारक में उठाया और उस में से पानी दहने अक़दस में ले कर उसी में कुल्ली करदी फिर उसे देकर फ़रमाया इस पानी को पिलाओ और इस से इस का मुँह धुलाओ उम्मे जुंदब रज़ि यल्लाहु अन्हा कहती हैं मैं उस औरत के पीछे गई और मैंने कहा इस पानी में से थोड़ा सा पानी मुझे दो उसने कहा इस में से लेलो तो मैं ने उस्में से एक चुल्लु पानी लेकर अपने बेटे अब्दुल्लाह को पिलाया माशा अल्लाह वह ज़िंदह रहा और उस की ज़िंदगी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के करम व एहसान से हुई उम्मे जुंदब रज़ि यल्लाहु अन्हा कहती हैं कि मैं ने उस औरत से मुलाक़ात करके बच्चे का हाल पूछा उस ने कहा वह लड़का तन्दरुस्त है कि कोई बच्चा उस जैसा अच्छा नहीं अबू नुइम की रिवायत में है वह तन्दुरुस्त हो गया और ऐसा अक़ल मंद हुवा कि लोगों में कोई उस जैसा अक़लमंद न था (ऐज़न स. 100, 101)

मोजिज़ ए लुआबे दहन (३६)

बहेकी ने बतरीक़े यहया बिन सईद हज़रते अनस रज़ि

यल्लाहु अन्हु से रिवायत की उन से कुबा शरीफ़ के कुंए के बारे में किसी ने पूछा, उन्होंने कहा वह कुआँ इतना था कि एक आदमी उस का पानी निकाल कर अपने गधे पर लाद कर ले जाता था और कुएं का पानी ख़त्म हो जाता था तो नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए और एक डोल पानी निकालनेका हुक्म दिया फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम नेउस पानी से वज़ू किया या पानी में लुआबेदहन डाला और हुक्म दिया कि इस पानी को कुएं में डाला जाए उस के बाद उस कुएं का पानी कभी नहीं टूटा। (ऐज़न स. 105)

मोजिज़ ए लुआबे दहन (३७)

इब्ने अबी शैबह इब्ने सअद और अबू नुइम ने तुलक़ बिन

अली रज़ि यल्लाहु अन्हु से रिवायत की उन्हों ने कहा हम सफ़ीर बन के बारगाहे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वस्ललम में हाज़िर हुए और हम ने अपनी सरज़मीन के कनीसा के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया और हमने ख्वाहिश की कि हमें अपना बचा हुवा पानी इनायत फ़रमायें तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने पानी तलब फ़रमाया और दहने अक्दस में पानी लेकर हमारे मश्कीज़ह में उस पानी को कुल्ली फ़रमादी और फ़रमाया इस पानी को लेजाओ जब तुम अपने इलाक़े में पहुँचो तो अपने कनीसा को तोड़ देना, और उस जगह में इस पानी को छिड़क देनाऔर उस जगह मस्जिद बनालेना, हमने अर्ज़ किया या नबी यल्लाह गर्मी शदीद है और हमारा शहेर दूर है पानी तो ख़ुश्क हो जाऐगा फ़रमाया इसे और पानी से मदद देते रहो वह उस की पाकीज़गी और बरकत को ही ज़्यादह करेगा फिर हम में उस मश्कीज़ह को लेकर जाने में झगड़ा हुवा कि कौन इसे उठा कर लेजाए तो हमने हर मर्द की बारी मुक़र्रर कर दी कि एक दिन एक लेकर चलता, तो दूसरे दिन दूसरा शख़्स जब हम अपने शहेर में पहुँचे तो हमने वैसा ही किया जैसा कि हमें हुक्म दिया गया था हमारे कनीसा का राहिब तै का आदमी थाहम ने नमाज़ के लिए अज़ान दी तो वह राहिब अज़ान सुन कर कहने लगा यह हक़ की दावत है फिर वह भाग गया उस के बाद हमने उसे न देखा (ख़साइसे कुबरा जि.2, स.106, ता107)

मोजिज़ ए लुआबे दहन (३८)

बहेक़ी ने हबीब बिन यसाफ रज़ि यल्लाहु अन्हु से रिवायत की उन्होंने कहा मैं नबि ए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथ एक जिहाद में शरीक था मेरे शाने पर

ने अपना लुआबे दहने अक़दस लगाकर जोड़ दिया और वह पैवस्त होकर ठीक हो गया फिर मैंने उस मारनेवाले को क़त्ल किया (ऐज़न स.166,167)

मोजिज़ ए लुआबे दहन (३९)

इब्ने सअद ने रिवायत की कि हमसे वाक़दी ने कहा उनसे उबई बिन अब्बास बिन सहल बिन सअद साइदी ने उन्होंने अपने वालिद से हदीस रिवायत की उन्होंने कहा कि मैंने चंद असहाबे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से सुना है जिनमें अबू उसेद, अबू हमीद और अबू सहल बिन सअद रज़ि यल्लाहु अन्हुम थे उन्होंने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम "बीरे बुज़ाआ" पर तशरीफ़ लाए आपने पानी लेकर वज़ू किया फिर बचा हुवा पानी कुएं में डाल दिया फिर दूसरे डोल में लेकर उसमें लुआबे दहने अक़दस डाला और उसका पानी नोश किया और कुएं में डाल दिया हुजूर के अहदे मुबारक में जब कोई बीमार होता तो आप फ़रमाते बुज़ाआ के पानी से इसे गुस्ल दो और वह गुस्ल करता और ऐसा हो जाता गोया उसे रस्सी से जकड़ रख्खा था जिसे खोल दिया गया यानी वह शिफ़ा याब हो जाता (ऐज़न स.168,169)

मोजिज़ ए लुआबे दहन (४०)

हाकिम ने हंज़ला बिन क़ैस रज़ि यल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की कि अब्दुल्लाह बिन आमिर बिन कुरैज़ रज़ि

यल्लाहु तआला अन्हु को बारगाहे नबुव्वत मं लाया गया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उन के लुआबे दहने अक़्दस लगाया और चंद आयाते क़ुरआनी पढ़कर दम किया तो वह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के लुआबे दहने अक़्दस को रग़बतो शौक़ के साथ पीने लगे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह सैराब करने वाले होंगे तो वह जिस ज़मीन को खोद ते उन के लिए उसी जगह पानी निकल आता। (ऐज़न स.196)

मआख़िज़

दलाइलुन्नबुव्वह
शवाहिदुन्नबुव्वह
ख़साइसे कुबरा
पुकारे या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
हदाइक़े बख़्शिश
माहनामा आला हज़रत

मौलाना सिराजुल क़ादरी की दूसरी पुषतकें

इस्लामी हीरे यानी सुन्नी कुइज़	150/-
गुस्ताख़े क़लम	20/-
अनवारे कुरआनी	20/-
मुजरिम अदालत में	50/-
पयामे रहमत	15/-
तोहफ़-ए-रमज़ान	10/-
बर्के रज़विय्यत बर फ़ितन-ए-वहाबिय्यत	18/-
बर्के वहदत बर फ़ितन-ए-नजदिय्यत	40/-
तोहफ़-ए-निकाह	30/-
असली सय्यदा बीबी की कहानी	10/-
मक़ामे आला हज़रत	70/-
असली दस बीबीयों की कहानियां	10/-
दश्ते करबला	30/-
क़ब्र से जन्नत तक	20/-
लुआबे दहने मुस्तफ़ा	20/-
माँ का आंचल	20/-
अस्हाबे कहफ़	10/-
तारीख़ी कहानियां	160/-
फ़ातिहा इमाम जाफ़र सादिक़	10/-
मुनाफ़िक़ीन	30/-
अंधे नजदी देख ले	30/-

तक़सीमेकार

नाज़ बुक डिपो

दुकान नं॰ १, मोहम्मद अली बिल्डिंग, मोहम्मद अली रोड, मुम्बई-३

GHAZI KITAB GHAR

Gangwal Bazar, Distt. Bahraech (U.P.)